Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्रमुख लोक वाद्य यंत्र

सतीश कुमार* डॉ. ज्योति मिश्रा**

*** शोधार्थी, संगीत (गायन), संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत**
**** असिस्टेंट प्रोफेसर (शोध निर्देशिका) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत**

शोध सारांश – जैसा कि हम जानते हैं, संगीतोपयोगि ध्वनि को नाद कहते हैं। और इस नाद की उत्पत्ति होती है,विभिन्न वाद्य यंत्रों से, वाद्यों की उत्पत्ति के विषय में बात करे तो हमारी सभ्यता संस्कृति में प्राचीन काल से ही वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता रहा हैं, संगीत गायन, वादन और नृत्य तीनों के सम्मिलित रूप को कहते हैं।अत: जितना महत्व संगीत में गायन अथवा नृत्य का हैं उतना ही महत्व वादन का भी हैं।
शब्द कुंजी – वाद्य यंत्र, घन वाद्य, तत् वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य।

प्रस्तावना – सर्वप्रथम वाद्यों की उत्पत्ति के विषय में विद्धानों का कहना हैं, कि मानव ने सर्वप्रथम प्रकृति में उपलब्ध चीजों से साधारण वाद्य यंत्रों का निर्माण किया होगा, जैसे–पत्थर, लकड़ी और जानवरों की खाल तथा हड्यिों से फिर धीरे–धीरे मानव सभ्यता का जैसे–जैसे विकास होता गया वैसे ही वाद्य यंत्रों का भी विकास होता गया और वाद्य यंत्रों की ध्वनि में भी मधुरता आने लगी। प्राचीन विद्धानों के अनुसार वाद्यों को मुख्यत: चार भागों में विभाजित किया गया हैं।

1. तत् वाद्य
2. सुषिर वाद्य
3. घन वाद्य
4. अवनद्ध वाद्य

1. तत् वाद्य– तत् वाद्य वह वाद्य यंत्र होते हैं,जिनमें तारों का प्रयोग किया गया होता हैं, और इन्हीं तारों को छेड़ कर स्वर उत्पन्न किए जाते हैं। मुख्यत: तारों पर आघात करने के लिए गज,मिजराब का प्रयोग किया जाता हैं ।

2. सुषिर वाद्य– सुषिर वाद्य के अंतर्गत उन वाद्य यंत्रों को रखा जाता हैं, जिनमें स्वरों की उत्पत्ति वायु द्धारा होती हैं जिसमें मुख से फूंक कर या वायु के वेग से स्वरों को उत्पन्न किया जाता हैं।

3. घन वाद्य– घन वाद्यों के अंतर्गत उन वाद्यों को स्थान दिया गया हैं जो घनता युक्त होते हैं,और इन्हें की सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र भी माना जाता हैं। घन वाद्यों को प्राय: एक भाग को दूसरे भाग पर प्रहार करके बजाया जाता हैं।

4. अवनद्ध वाद्य– अवनद्ध वाद्य यंत्रों के अंतर्गत वे वाद्य यंत्र आते हैं जिनके मुख पर चमड़े मढ़े होते हैं। और उन पर आघात करके ध्वनि उत्पन्न की जाती हैं।

लोक वाद्य मुख्यत: वह वाद्य यंत्र होते हैं जिनका प्रयोग लोक संगीत के अंतर्गत लोकगीतों में किया जाता है यह साधारण बनावट के होते हैं किंतु इनके बोलों में अत्याधिक मधुरता होती हैं इसी कारण कई लोक वाद्य यंत्रों का प्रयोग अब शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत में भी किया जाने लगा हैं।

यहां हम कुछ प्रमुख लोक वाद्य यंत्रों के विषय में चर्चा करेंगे जिनका अत्यधिक प्रयोग जनमानस द्धारा किया जा रहा हैं।

ढोलक– ढोलक एक ऐसा पारंपरिक लोक वाद्य हैं जो लोक संगीत की सभी विद्या में प्रयोग किया जाता है यह भजन कीर्तन से लेकर शादी विवाह के गीतों में संगत के लिए प्रयोग किया जाता हैं। यह आकार में छोटा और बड़ा दोनों रूप में पाया जाता हैं, छोटे को ढोलकी और मध्यम आकार वाले को ढोलक तथा बड़े आकार वाले को ढोल की संज्ञा दी गई हैं। इसका निर्माण प्राय: आम, शीशम, नीम,जामुन की लकड़ी से किया जाता हैं।

नगाड़ा– यह भारत के प्राचीनतम लोक वाद्यों में से एक सबसे महत्वपूर्ण वाद्य हैं। इसे नगारा, नक्कारा भी कहा जाता हैं, प्राचीन काल में नगाड़ा का प्रयोग जनता को कोई आवश्यक सूचना देने या किसी खतरे से बचने की सूचना देने के लिए किया जाता था। किंतु समय के साथ बदलाव हुआ और अब इसका प्रयोग मंदिरों में आरती के साथ तथा अन्य शुभ अवसरों पर किया जाता हैं, इसमें भैंस की खाल का प्रयोग किया जाता हैं जिस कारण इसकी आवाज भारी और बुलंद होती है।

डमरु– डमरू को अवनद्ध वाद्य की श्रेणी में सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र माना जाता हैं। कहां जाता है कि भगवान शिव तांडव नृत्य के साथ डमरू का ही वादन किया करते थें परंतु वर्तमान समय में इस लोक वाद्य का प्रयोग जोगियों द्धारा भजन कीर्तन में तथा कुछ लोक नृत्यों के साथ संगत के लिए किया जाता हैं।

मंजीरा– इस लोक वाद्य का प्रयोग भक्ति संगीत में अन्य वाद्य के साथ संगत के रूप में किया जाता हैं। यह एक घन वाद्य की श्रेणी में आता है यह पीतल, लोहा, कांसा धातु का बना होता हैं यह एक युग्म वाद्य हैं। इसके दोनों भाग समान होते हैं इसे दोनों हाथों में अलग–अलग पकड़ कर एक दूसरे पर आघात करके बजाया जाता हैं।

करताल– यह भी भक्ति संगीत से संबंधित लोक वाद्य हैं। जो भजन कीर्तन में प्रयोग किया जाता हैं कभी–कभी लोक नृत्यों के साथ भी इसका प्रयोग किया जाता हैं यह अंग्रेजी के बी अक्षर की तरह दिखाई देता हैं यह भी एक घन वाद्य हैं यह लकड़ी का चार से पांच अंगुल चौड़ी तथा दो अंगुल मोटी पट्टी से बना होता हैं। इसकी लंबाई लगभग 6 इंच से 10 इंच तक होती है।

चिमटा– यह वाद्य भजन कीर्तन और लोक नृत्य के साथ प्रयोग किया जाता

है यह झंकार उत्पन्न करने वाला एक घन वाद्य हैं। यह चिमटे के समान आकार का होता हैं,और इसकी दोनों भुजाओं पर पीतल के छोटे–छोटे चक्कों के समूह लगे होते हैं जो थोड़े ढीले कसे रहते हैं। जब दोनों भागों को आपस में टकराया जाता हैं तो झंकार उत्पन्न होती हैं।

एकतारा– एकतारा तत् वाद्य की श्रेणी में आने वाला वाद्य यंत्र हैं इसका वर्णन प्राचीन ग्रंथो में भी प्राप्त होता हैं। इस वाद्य में एक तार का प्रयोग होता है इसीलिए इसे एकतारा कहा जाता हैं। इसकी आवाज बहुत मधुर होती हैं,यह कद्दू की गोल तुंबी तथा बांस के प्रयोग से बनाया जाता हैं।

बानाम– इस वाद्य को सारंगी के पूर्वज के रूप में देखा जा सकता हैं। यह एक तत् वाद्य के ही अंतर्गत आता हैं, यह नारियल के खाल का बना होता हैं। इसके कटे हुए मुख पर खाल लगी होती हैं, और इसे गज की सहायता से बजाया जाता हैं।

शहनाई– लोक वाद्यों के अंतर्गत शहनाई एक बहुत ही चर्चित और महत्वपूर्ण लोक वाद्य हैं यह एक बहुत ही मधुर ध्वनि उत्पन्न करने वाला लोक वाद्य हैं। प्राचीन ग्रंथकार पंडित शारंगदेव ने शहनाई को 'सनांदी' कहा हैं। जिसका अर्थ होता है सुंदर नाद देने वाला इसे प्राय: शुभ अवसरों पर बजाया जाता हैं।

बांसुरी– यह लोक वाद्य वैदिक काल से लेकर अब तक प्रचार में हैं। यह एक सुषिर वाद्य की श्रेणी में आने वाला वाद्य हैं, इसे बांसुरी के अलावा वेणु, मुरली, वंशी आदि कई नाम से जाना जाता हैं। इसका प्रयोग लोकगीत, लोक नृत्यों के साथ किया जाता हैं। अब वर्तमान समय में इसका एकल वादन भी किया जाने लगा हैं।

हारमोनियम– हारमोनियम एक सुषिर वाद्य की श्रेणी में आने वाला लोक वाद्य हैं। वैसे हारमोनियम का आविष्कार तो पाश्चात्य देशों में हुआ, किंतु अब यह भारतीय वाद्यों की श्रेणी में स्थान रखता हैं। यह कई प्रकार के होते हैं।

1. स्टैंडर्ड हारमोनियम
2. फोल्डिंग हारमोनियम
3. स्केल चेंजर हारमोनियम
4. डबल बेलो हारमोनियम

शंख– यह सबसे प्राचीन सुषिर वाद्य यंत्र माना जाता हैं। इसका प्रयोग भी मांगलिक अवसरों पर किया जाता हैं, शंख के विषय में प्राचीन ग्रंथो से भी कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं। यह एक समुद्री जीव का ढांचा होता हैं, जो समुद्र से निकाला जाता हैं। इसकी मुख्यत: दो जातियां पाई जाती हैं। दक्षिणावर्त और वामावर्त।

निष्कर्ष– निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि लोक वाद्य हमारी सभ्यता संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं और हमें इसे भी सुरक्षित और प्रचारित प्रसारित करने की आवश्यकता हैं।

प्राय: देखा जाता हैं कि लोक वाद्यों के कलाकारों को वह सुख सुविधा नहीं प्रदान की जाती जो अन्य वाद्य यंत्रों के कलाकारों को प्रदान की जाती हैं। जिस कारण लोक वाद्यों के कलाकारों को अपना जीवन यापन करने के लिए इन लोक वाद्यों का वादन छोड़कर अन्य कार्य करना पड़ता हैं , जिस कारण लोक वाद्यों का भविष्य खतरे में महसूस होता हैं।

अत: लोक वाद्यों के कलाकारों को भी अन्य वाद्यों के कलाकारों की तरह सुख सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। जिससे वह अपने जीवन को सुख सुविधा के साथ व्यतीत करते हुए इन लोक वाद्यों को जीवित रख सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. डॉ0 मिश्र लालमणि (2020), भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली।
2. डॉ0 कुमारी कौशल (2009), भारतीय लोक वाद्य, साहित्य रतनालय, पब्लिकेशन।
3. चक्रवर्ती सुमिता (2018), लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यंत्र, कनिष्क पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

****